विकास पथ

एम आर व्ही सी समाचार पत्रिका

जुलाई - सितंबर, 2014

मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन लि.

संरक्षक

श्री राकेश सक्सेना
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

श्री आर.एस. खुराना
निदेशक (परियोजना)

श्री नरेश चंद्र
निदेशक (तकनीकी)

संपादक मंडल

श्रीमती अलका अ. मिश्रा
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
मुख्य कार्मिक अधिकारी

क्र. सं.	विषय सूची	पृष्ठ सं.
1.	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश	3
2.	निदेशक (परियोजना) का संदेश	4
3.	निदेशक (तकनीकी) का संदेश	4
4.	निदेशक (वित्त) का संदेश	5
5.	संपादकीय – मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य कार्मिक अधिकारी	5
6.	एमआरवीसी का स्थापना दिवस समारोह	6
7.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति एमआरवीसी की तिमाही बैठक	7
8.	विरार ईएमयू कार शेड में चार टियर निरीक्षण	10
9.	सायन और चिंचपोकली ट्रेक्शन सब-स्टेशन में 110 के. वी पावर सप्लाय का प्रावधान	12
10.	मुंबई उपनगर खंड में एमएसडीएसी कार्य	14
11.	अंधेरी स्टेशन पर स्वचलित सीढ़ियाँ (एस्केलेटर) स्थापित करना	15
12.	मुंब्रा खाड़ी के ऊपर दूसरे स्टील गर्डर की लाँचिंग	17
13.	जापानी कार्यशैली एवं भारतीय मानसिकता	18
14.	कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी व संपोषणीयता (सीएसआर व एस)	20
15.	कंप्यूटर में हिंदी	23
16.	यह भी गुजर जाएगा	24
17.	एम्प्लाई ऑफ द मंथ	26
18.	कविताएं	28

संदेश

साथियों,

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी शुभ कामनाएं । 14 सितंबर, 1949 को भारतीय संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था इसीलिए इस दिन को हम हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं । देश को एकता के सूत्र में बांधने के लिए राजभाषा हिंदी का काफी योगदान रहा है । हिंदी केवल हमारी राष्ट्रभाषा ही नहीं बल्कि राजभाषा भी है, जिसे देश की जनता जानती और समझती है । हमारे देश के अधिकांश लोग हिंदी बोलते हैं, इसी कारण हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ है ।

यद्यपि एमआरवीसी में हिंदी का उत्कृष्ट कार्य हो रहा है, तथापि, सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप कार्यान्वयन के लिए हमें सजग रहना होगा । राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) का अनुपालन एक कानूनी अनिवार्यता है । अत: इसके अंतर्गत आने वाले कागजात जैसे सामान्य आदेश, परिपत्र आदि द्विभाषी रूप में जारी किए जाएं । हमें हिंदी में कार्यालयीन कार्य करने के लिए हर संभव उपाय करने चाहिए । कार्यालय के लगभग सभी कंप्यूटरों पर द्विभाषी कार्य करने की व्यवस्था है । हमें सुनिश्चित करना चाहिए कि इन कंप्यूटरों पर अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाए ।

आज सभी क्षेत्रों में, भारत तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर है । परिवर्तन के इस युग में हमें समय के साथ चलना होगा । हिंदी दिवस के अवसर पर आइए संकल्प लें कि हिंदी सेवा को देश-सेवा मान कर अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वाह करेंगे और स्वयं पहल करके राजभाषा के प्रति उत्साह को कायम रखेंगे ।

(राकेश सक्सेना)

दिनांक 14-09-2014

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

किसी देश की राष्ट्रभाषा वह होती है जिसे देश की अधिकांश जनता समझ और बोल सकती हो तथा वह उस देश की संस्कृति को अभिव्यक्त करने में समर्थ हो । भाषा ऐसी होनी चाहिए कि उसे अधिकारी आसानी से सीख सकें और वह भारत में धार्मिक आर्थिक और राजनीतिक संपर्क के माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम हो । अधिकांश भारतवासियों द्वारा बोली जाती हो । ऐसी भाषा को चुनते समय आपसी या क्षणिक हितों पर ध्यान न दिया जाए । हिंदी भाषा में ये सारे गुण मौजूद हैं । राजभाषा का तात्पर्य है संविधान द्वारा सरकारी कामकाज, प्रशासन संसद और विधान मंडलों तथा न्यायिक कार्यकलाप के लिए स्वीकृत भाषा ।

26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू होने के साथ ही राजभाषा संबंधी उपबंध भी लागू हो गए हैं । हिंदी का प्रचार प्रसार करने और उसकी अभिवृद्धि करने का दायित्व संघ सरकार को सौंपा गया है । स्वतंत्रता के बाद राजसत्ता जनता के हाथ में आ गई है और लोकतंत्र में यह आवश्यक है कि देश का राजकाज लोकभाषा में हो अतः राजभाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार किया गया । हमें भी अपने कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए ।

राजभाषा पत्रिका ''विकास पथ'' के सितंबर 2014 अंक के प्रकाशन से कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी साहित्यिक सृजनशीलता के लिए एक सशक्त और लोकप्रिय माध्यम उपलब्ध हुआ है ।

(आर एस खुराना)
निदेशक परियोजना

संदेश

राजकाज संचालन और सरकारी कामकाज के लिए किसी न किसी भाषा की जरूरत होती है । परंतु यह आवश्यक नहीं कि प्रशासन की भाषा अंग्रेजी ही हो । विश्व में बहुत से ऐसे देश हैं जिनकी राजभाषा अंग्रेजी नहीं है, वहां पर भी राजकाज सुचारू रूप से चलता है । अक्सर अंग्रेजी को विज्ञान की भाषा बताया जाता है जबकि विज्ञान तो सभी भाषाओं में है । सभी देश अपनी अपनी भाषा में अविष्कार करते हैं और वैज्ञानिक विषयों पर लेख लिखे जाते हैं । बाद में अंग्रेजी में उसका अनुवाद किया जाता है । विज्ञान एक विषय है, जो किसी भी भाषा में पढ़ाया जा सकता है ।

हिंदी को राजभाषा का सही सम्मान तभी प्राप्त होगा जब हम अंग्रेजी के बजाए हिंदी में बातचीत तथा भाषा व्यवहार करना गौरव की बात समझेंगे । उस भाषा को राजभाषा कहा जाता है जो सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में स्वीकार की गई हो और शासन तथा जनता के बीच आपसी संपर्क में काम आती हो । राजभाषा के माध्यम से सभी प्रशासनिक कार्य किए जाते हैं ।

कला और प्रतिभा अपने विकास के लिए समय और स्थान पर आश्रित नहीं रहती । अपने विचारों को सहज और सरल स्वरूप में व्यक्त करने के लिए राजभाषा पत्रिका ''विकास पथ'' सभी कर्मचारियों को उचित अवसर प्रदान करती है । मैं पत्रिका के सितंबर 2014 अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ ।

(नरेश चंद्रा)
निदेशक तकनीकी

संदेश

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप मे स्वीकृत किया गया । हिंदी विधिवत् भारत संघ की राजभाषा है । इसके पूर्व कार्यालयों में अंग्रेजी का प्रयोग होता था और तुरंत अंग्रेजी को हटा कर हिंदी का उपयोग करना कई कारणों से संभव नहीं था । अतः यह तय किया गया कि संविधान लागू होने के 15 वर्ष की अवधि अर्थात 1965 तक अंग्रेजी राजभाषा के रूप में कार्य करती रहेगी, और तब तक हिंदी न जानने वाले लोग हिंदी सीख कर प्रशासनिक कार्य करने में अपने आप को सक्षम बना लेंगे । लेकिन 1965 के आस पास यह महसूस किया गया कि हिंदी के उपयोग में अभी भी अपेक्षित पारंगतता प्राप्त नहीं हुई है । लोगों की इस शंका का निवारण करने के लिए राजभाषा अधिनियम 1963 पारित किया गया जिसके अनुसार अंग्रेजी का प्रयोग तब तक जारी रहेगा जब तक कि सभी लोग हिंदी में पारंगत न हो जाएं ।

हिंदी को राजभाषा के रूप में सरकारी उपक्रमों में लागू करने के लिए, आपस में वार्तालाप आदि हिंदी में ही किया जाए एवं पत्राचार सरल भाषा में किया जाना चाहिए । आशा है सभी अधिकारी/कर्मचारी अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करके राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने में अपना सहयोग देंगे।

एमआरवीसी की राजभाषा पत्रिका ''विकास पथ'' का सितंबर 2014 अंक प्रकाशित किया जा रहा है । आशा है यह सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा ।

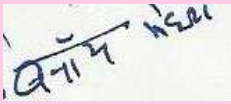

(बी.के. मेहरा)

निदेशक वित्त

संपादकीय

एमआरवीसी की राजभाषा पत्रिका "विकास पथ" का सितम्बर–2014 अंक पाठकों के हाथों में सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है । सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के सहयोग से इसका प्रकाशन संभव हो पाया है । कार्यालय में साहित्यिक प्रतिभाओं की कमी नहीं है । जिन लेखकों की रचनाएं इसमें प्रकाशित की गई हैं वे भी अत्यंत उत्साहित हैं । उन्हें अभिव्यक्ति कि लिए अपना प्लेटफार्म मिला है ।

राजभाषा संबंधी नीतियों के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक है कि हिंदी के प्रयोग हेतु समुचित वातावरण तैयार किया जाए । "विकास पथ" इस कार्य के लिए एक अच्छा साधन है । हिंदी एक सशक्त भाषा है और इसका शब्द भण्डार समृद्ध है । प्राचीन काल से ही आम जनता द्वारा इसका प्रयोग किया जा रहा है । जब संचार के अधिक साधन नहीं थे तब नेताओं और साधु–संतों ने अपने संदेश जनता तक पहुंचाने के लिए हिंदी का सहारा लिया । प्राचीन कवियों और समाज सुधारकों ने हिंदी में साहित्य सृजन किया । यद्यपि संविधान में हिंदी के प्रचार प्रसार और इसकी अभिवृद्धि का दायित्व सरकार को सौंपा गया है, परंतु आम जनता के बीच इसका प्रयोग अपने आप बढ़ रहा है ।

पत्रिका का कलेवर सुंदर और आकर्षक बनाने तथा प्रकाशन के लिए अपनी रचनाएं देकर सहयोग करने हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का मैं आभार व्यक्त करती हूं ।

धन्यवाद ।

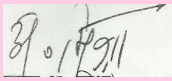

(अलका अ. मिश्रा)

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य कार्मिक अधिकारी

एमआरवीसी का स्थापना दिवस समारोह

एमआरवीसी का स्थापना दिवस समारोह, दिनांक 14-7-2014 को पश्चिम रेल के प्रधान कार्यालय स्थित गोडबोले सभागृह में आयोजित किया गया । इस अवसर पर श्री राकेश सक्सेना, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने कर्मचारियों द्वारा किए गए अच्छे कार्य की सराहना की तथा पुरस्कार वितरण किया । श्री आर एस खुराना निदेशक परियोजना ने एमआरवीसी में चल रही प्रमुख गतिविधियों की जानकारी दी । श्री नरेश चंद्र, निदेशक तकनीकी ने कहा कि एमआरवीसी का कार्यकाल बढ़ाए जाने से हम सबको अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का एक और मौका मिला है । श्री बी के मेहरा, निदेशक वित्त ने कर्मचारियों को प्रेरणा देते हुए कहा कि हमें मुंबई के रेल यात्रियों को बेहतर सेवा उपलब्ध कराने के लिए और अधिक प्रयास करने चाहिए । इस अवसर पर सभी विभागाध्यक्ष एवं बड़ी संख्या में अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे । दोपहर भोजन की भी व्यवस्था की गई थी ।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती स्मृति जेकब, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी ने किया तथा श्रीमती अलका अ. मिश्रा, मुख्य कार्मिक अधिकारी ने धन्यवाद किया ।

एम.आर.वी.सी. में 14 जुलाई, 2014 को स्थापना दिवस समारोह के आयोजन के चित्र

इस उपलक्ष्य पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा कर्मचारियों को पुरस्कार हेतु धनराशि का वितरण किया गया ।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति एमआरवीसी की तिमाही बैठक - दिनांक 25-6-2014

मुंबई रेलवे विकास कार्पोरेशन लिमिटेड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की जून तिमाही की बैठक दिनांक 25-06-2014 को श्री राकेश सक्सेना, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में संपन्न हुई । बैठक में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 24-1-2014 को किए गए निरीक्षण के दौरान इंगित ''ध्यान देने योग्य मदों'' पर विशेष रूप से चर्चा हुई । गृह मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा जारी वर्ष 2014-15 के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भी कहा गया । बैठक में श्री नरेश चंद्र, निदेशक तकनीकी, श्री आर एस खुराना, निदेशक परियोजना, तथा श्री बी के मेहरा, निदेशक वित्त, सभी विभागाध्यक्ष एवं सदस्य उपस्थित थे ।

श्रीमती अलका अ मिश्रा, मुख्य राजभाषा अधिकारी के अनुरोध पर, अध्यक्ष महोदय द्वारा, एमआरवीसी की त्रैमासिक राजभाषा पत्रिका ''विकास पथ'' के जून 2014 अंक का विमोचन किया गया । अध्यक्ष महोदय ने 'विकास पथ' की अत्यंत प्रशंसा की तथा इसे एमआरवीसी की वेबसाइट में अपलोड करने और इसकी प्रतियां सभी कर्मचारियों को उपलब्ध कराने का सुझाव दिया ।

(स्मृति जेकब)
वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी

एम.आर.वी.सी. में 14 जुलाई, 2014 को स्थापना दिवस समारोह के आयोजन के चित्र

एम.आर.वी.सी. में 14 जुलाई, 2014 को स्थापना दिवस समारोह के आयोजन के चित्र

विरार ईएमयू कार शेड में चार टियर निरीक्षण शेड : भारतीय रेल में अपनी तरह का प्रथम

विरार कार शेड में तीन रेलपथ का, चार टियर निरीक्षण शेड प्रारंभ किया गया है । इस निरीक्षण शेड में चार कार्य स्तर हैं । ये चार कार्य स्तर हैं (I) अंडर गियर निरीक्षण के लिए सेंट्रल पिट्स (II) फर्श स्तर - पार्श्व की ओर साइड निरीक्षण के लिए (III) कोच इंटीरियर एक्सेस प्लेटफार्म तथा (iv) रूफ वर्किंग प्लेटफार्म

भारतीय रेल में यह अपनी तरह की प्रथम व्यवस्था है ।

वर्तमान प्रणाली में पिट्स में अपर्याप्त हेड रूम होने के कारण अंडर गियर का अनुरक्षण प्रभावित होता है । इस समस्या के कारण अंडरगियर तक पहुंचना भी मुश्किल होता है, जिससे अनुरक्षण गतिविधियाँ प्रभावित होती हैं । आगे, कोच इंटीरियर्स तथा छत के अनुरक्षण के लिए लगातार प्लेटफार्म नहीं है, जिससे अनुरक्षण असुविधाजनक और समय लगने वाला होता है ।

नई प्रणाली में संपूर्ण रेक के साथ साथ प्लेटफार्म, दो अपर स्तर के लिए उपलब्ध कराया गया है । आपात स्थिति में यात्रा की जाने वाली दूरी को सीमित करने के लिए, प्लेटफार्मों पर 70 मीटर की दूरी पर 5 एक्सेस प्वाइंट लगाए गए हैं । सभी रेल पथ पर 25 केवी ओएचई (ऊपरी उपस्कर) कर्षण की आपूर्ति की गई है । चार टियर निरीक्षण शेड में अंडर गियर का आई लेवल निरीक्षण तथा छत उपस्करों की सरल उपागम्यता से इनके दोष /खराबियों का पता लगाना तथा उन्हें दूर करना आसान हो गया है । इसके परिणामस्वरूप फेल्यूर की संख्या में कमी आई है तथा उपनगरीय सेवा की बेहतर विश्वसनीयता और समय पालन हो सका है ।

आन्तरिक एक्सेस गेंग्वे

निरीक्षण के चार स्तर- फर्श, पिट, इंटिरियर तथा छत

रूफ़ गेंग्वे के लिए संरक्षा प्रबंधन

स्टील के खम्बों पर आधारित रेल

प्लेट्फार्म पर पहुचने के लिए सीढ़ियां

विरार कार निरीक्षण शेड मे नई तकनीक की रेकों का निरीक्षण

(कुलदीप जैन)
उप मुख्य बिजली इंजीनियर.-III

(एम.जी. धामनगांवकर)
मुख्य बिजली इंजीनियर, सी-II

सायन और चिंचपोकली ट्रेक्शन सब-स्टेशन में 110 के. वी पावर सप्लाय का प्रावधान

मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन को एम. यु. टि. पी - II के तहत मध्य रेलवे के सायन एवं चिंचपोकली कर्षण उप स्टेशन को टाटा पावर कॉर्पोरेशन के क्रमश: धारावी एवं परेल रिसिव्हिंग केंद्र से 110KV ग्रेड XLPE केबल के माध्यम से बिजली शक्ती प्रदान करने का कार्य सौपा गया यह कार्य मेसर्स इलजिन इलेक्ट्रिक, साउथ कोरिया को जनवरी 2010 मे सौपा गया ।

यह अत्यंत कठिन कार्य था - केबल बिछाने का कार्य रेलवे एवं म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के मदद से करना था। केबल बिछाने का कार्य सुचारु रुप से करने के लिये निम्नलिखित कदम उठाये गये।

सायन-धारावी के केबल बिछाने कि लंबाई करीबन 11.5 कि. मी. थी, इसे 7 भागों से बाँटा गया। 30 जाईंट लगाये गये, एवं दोनो सिरों पर 10 केबल के टर्मिनेशन का प्रयोग किया गया।

परेल - चिंचपोकली के केबल बिछाने कि लंबाई करीबन 12 कि. मी. थी, इसे 6 भागों से बाटा गया।

केबल बिछाने के लिए करीबन 1.6 मिटर गहराई का गढ्ढा केबल के रास्ते की लंबाई की दिशा मे खोदा गया, इस तरह से दोनो जगह कुल 5 केबल बिछाये गये। फ़ीडर 1 एवं 2 के 2-2 केबल एवं 1 अतिरिक्त केबल।

टाटा के परेल रिसिव्हिंग केन्द्र से चिंचपोकली कर्षण सब स्टेशन तक केबल बिछाने का कार्य मुख्यत: मुंबई महानगरपालिका के आंबेकर मार्ग, एवं बाबा साहेब आंबेडकर मार्ग से होकर गुजरता है। यह अत्यंत व्यस्त मार्ग है और यातायात मे बगैर व्यवधान उत्पन: किये हुये यह काम दिन में करना टेढी खीर था। अत: यातायात को देखते हुये, यह कार्य रात मे किया गया| कार्य के दौरान पानी की पाईप लाइन, गॅस पाइप लाईन, दुसरे उपभोक्ताओं के केबल, इत्यादी को बचाते हुए 110 केव्ही पावर की केबल बिछाई गई। कार्य के दौरान स्थानीय असमाजिक तत्वो ने भी कार्य में व्यवधान उत्पन्न: करने कि काफ़ी कोशिश कि जिसका निपटारा समय समय पर तुरन्त किया गया। कार्य अति कुशलता एवं सभी तकनीकी पहलुओं को ध्यान मे रखते हुए किया गया। एक और विशिष्ट बात यह है, कि कार्य के दौरान ना तो कोई कर्मचारी या बाहरी आदमी हताहत हुआ न ही कोई दुर्घटना घटी । दुसरी विशेष बात यह है, कि इस कार्य का समायोजन बरसात के मौसम मे नहीं किया जा सकता, इसके बावजुद यह कार्य प्लानिंग के पहले किया गया।

सायन कर्षण उप स्टेशन के केबल चार्जिंग का कार्य 22.06.2014 एवं चिंचपोकली कर्षण उप स्टेशन का कार्य 29.06.2014 को संपन्न हुआ।

सभी संबंधित जैसे कि ठेकेदार, टाटा पॉवर, म्युनिसिपल कोर्पोरेशन के कर्मचारियो एवं अधिकारियों ने यह कार्य संपन्न करने के लिये काफ़ी सहायता प्रदान की ।

(गोपाल चंद्र)

मुख्य बिजली इंजीनियर, सी-I

मुंबई उपनगर खंड में एमएसडीएसी कार्य

एमआरवीसी द्वारा मध्य रेल के छत्रपति शिवाजी टर्मिनस मुंबई (सीएसटीएम)- ठाणे खंड, कल्याण तथा मुंबई मंडल के रावली जंक्शन यार्ड और पश्चिम रेल पर मुंबई मंडल के जोगेश्वरी यार्ड में मल्टी सेक्शन डिजिटल एक्सल काउंटर (एमएसडीएसी) प्रणाली की, डिजाइन, आपूर्ति तथा स्थापित किए जाने का कार्य किया जा रहा है ।

एमएसडीएसी कार्य मुंबई शहरी परिवहन परियोजना 2 ए (एमयूटीपी 2 ए) का एक भाग है तथा इस कार्य के अंतर्गत कुल 19 स्टेशनों पर, 1584 की संख्या में डिटेक्टशन प्वाइंट सहित कुल 1199 की संख्या में रेलपथ खंड पर फ्राउस्चर सेंसोर टेकनीक, आस्ट्रिया द्वारा निर्मित, एक्सल काउंटर सिस्टम उपलब्ध कराए जा रहे हैं ।

डिजिटल एक्सल काउंटर के लाभ निम्नलिखित हैं :-

1. मानसून के दौरान रेलपथ पर बेलास्ट कंडीशन/बाढ़ की स्थिति से स्वतंत्र है ।
2. उच्च सुरक्षा स्तर: जंग युक्त पटरियों पर भी हल्के वाहनों का डिटेक्शन
3. ट्रेक्शन करेंट का प्रभाव नहीं
4. पावर तथा स्थान की कम आवश्यकता
5. स्थापित करने तथा अनुरक्षण में आसान
6. चोरी की कम संभावना

एक्सल काउंटर सिस्टम से मुंबई के उपनगरीय यात्रियों को खास तौर पर मानसून के समय में बड़ी राहत मिलेगी क्योंकि इसमें उच्च उपलब्धता तथा विस्तारित सुरक्षा उपकरण हैं, जिससे रेलपथ पर बाढ़ की स्थिति में भी कार्य करने की क्षमता है ।

(संजय सिंह)
महाप्रबंधक, एसएंडटी

अंधेरी स्टेशन पर स्वचलित सीढ़ियाँ (एस्केलेटर) स्थापित करना

अंधेरी से गोरेगाँव के बीच हार्बर लाइन के विस्तारीकरण का कार्य एमयूटीपी-2 परियोजना के तहत स्वीकृत किया गया था । अंधेरी व गोरेगाँव स्टेशनों को डिजाइन करते समय प्रत्येक स्टेशन पर स्वचलित सीढ़ियां (एस्केलेटर) लगाने पर विचार किया गया, डैक की ऊंचाई व यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए यह निश्चय किया गया कि केवल सीढ़ियां पर्याप्त नहीं हैं अपितु स्वचलित सीढ़ियों (एस्केलेटर) का प्रावधान भी किया जाना चाहिए । यात्रियों को सुविधापूर्वक डैक पर पहुँचाने के लिए स्वचलित सीढ़ियां (एस्केलेटर) के प्रावधान को मंजूरी दी गई, जबकि यात्री नीचे की ओर सीढ़ियों के माध्यम से जा सकते हैं ।

अंधेरी-गोरेगाँव के विकास का कार्य मेसर्स रेलकॉन को आबंटित किया गया था, जिसने स्वचलित सीढ़ियां (एस्केलेटर) का कार्य मेसर्स जॉनसन द्वारा काराना निर्धारित किया । चूंकि यह एस्केलेटर हेवी ड्यूटी है, एवं इनका निर्माण भारत में नहीं होता है । अत: इन्हें चीन की कंपनी मेसर्स जेईसी से आयात किया गया ।

मुंबई मंडल के अधिकारियों द्वारा स्थान निर्धारित करने के उपरांत एस्केलेटर की जनरल अरेंजमेंट ड्राइंग (जीएडी) मंडल द्वारा अनुमोदित की गई और 6 एस्केलेटर अंधेरी स्टेशन पर लगाने हेतु दिनांक 25-10-2013 को सहमति पत्र जारी किया गया । गोरेगाँव स्टेशन के लिए

6 एस्केलेटर लगाने हेतु दिनांक 17-11-2013 को दूसरा सहमति पत्र जारी किया गया जिसमें 3 माह का डिलीवरी समय कंपनी को दिया गया । 6 एस्केलेटर की प्रथम लॉट दिनांक 10-01-2014 को एवं दूसरी लॉट दिनांक 02-11-2014 को मुंबई पहुंच गई । सभी आवश्यक अर्थात पोर्ट, रोड ट्रैफिक व पुलिस प्राधिकारी के क्लियरेंस के उपरांत यह एस्केलेटरस दिनांक 28-01-2014 को गोरेगांव स्टेशन पर पहुँच गए ।

तत्पश्चात इन एस्केलेटर्स को अंधेरी स्टेशन पर स्थापित करने का कार्य शुरू हुआ । स्थापित करने के दौरान प्लेटफार्म को ब्लॉक करना एक सबसे बड़ी समस्या थी । इन एस्केलेटर्स को छोटी हाइड्रोलिक क्रेन की सहायता से स्थापित किया गया । निरीक्षण का कार्य मेसर्स राइट्स के सुपुर्द किया गया । मेसर्स राइट्स द्वारा शुरुआती दौर में कई निरीक्षण किये गये ।

एस्केलेटर के स्थापना से पूर्व मंडल के साथ मिल कर निरीक्षण किया गया । तत्पश्चात अंधेरी स्टेशन पर दिनांक 19-06-2014 को दो एस्केलेटर एवं दिनांक 25-07-2014 को एक एस्केलेटर को स्थापित कर यात्रियों की सुविधा हेतु समर्पित कर दिया गया । ये एस्केलेटर तब से अभी तक सुचारू रूप से कार्य कर रहे हैं । प्रत्येक एस्केलेटर का उपयोग लगभग 25,000 यात्री प्रति एस्केलेटर प्रति दिन करते हैं । यात्री इन एस्केलेटर्स से बहुत खुश हैं एवं माँग कर रहे हैं कि और अधिक संख्या में एस्केलेटर लगाए जाएं ।

एमआरवीसी प्रयासरत है, कि यात्रियों की सुविधाओं के लिए जरूरत के अनुसार अधिक से अधिक एस्केलेटर लगाए जाएं ।

(अजीत शर्मा)
कार्यकारी निदेशक (विद्युत)

मुंब्रा खाड़ी के ऊपर दूसरे स्टील गर्डर की लाँचिंग

मध्य रेलवे के मेजर पुल नं. 40/1 के पास मुंब्रा खाड़ी के ऊपर दो 76.2 मी. लंबे स्टील गर्डर लाँच किया जाने थे| पहला स्टील गर्डर दिनांक 5,6 जून, 2014 को लाँच किया गया था| मुंबई मे जून माह से ही मॉनसून सक्रिय हो जाता हैं| प्रतिकूल बारिश के साथ साथ मुंब्रा खाडी मे उच्च ज्वार (High tide) के दौरान जलस्तर भी काफ़ी बढ जाता है। इतनी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद भी दूसरे स्टील गर्डर को लाँच करने के लिये सघन योजना की गई। सारी तैयारी के बाद, दूसरा स्टील गर्डर 21 और 22 जुलाई, 2014 को लाँच किया गया। इस गर्डर का वजन भी 350 टन था | स्टील गर्डर टुकड़े टुकड़े में सड़क मार्ग द्वारा साइट पर लाया गया, उसके उपरांत गर्डर को साइट पर जोड़ा गया तथा पेंटिंग की गयी | मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन लिमिटेड के इतिहास में इतने लंबे स्टील गर्डर पहली बार लाँच किये गये हैं।

(श्री राजीव वर्मा)

उप मुख्य अभियंता

जापानी कार्यशैली एवं भारतीय मानसिकता

हमने हाल ही में होंडा, मारुति सुजुकी एवं टोयोटा कंपनियों के कामगारों में असंतोष की खबरें सुनी हैं । इन सारी कंपनियों में जापान का निवेश है, तथा प्रबंधन भी उन्हीं का है । इस असंतोष की वजह क्या जापानी सोच, उनकी कार्यशैली जो कामगारों को कार्य में उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु जबरन ढकेलती है, नियम जो पत्थर की लकीर हैं, सतही स्तर पर प्रचलित परंपराओं से अनभिज्ञ स्थित या फिर भारतीय प्रबंधकों एवं कामगारों द्वारा इस प्रकार की व्यवस्था एवं प्रबंधन को न समझ पाना है ?

इसका उत्तर जानने के लिए सर्वप्रथम हमें जापानी प्रबंधन एवं कार्यशैली को अच्छी तरह समझना होगा । जापान की कंपनियाँ अपने लक्ष्य को हासिल करने हेतु बहुत ही कटिबद्ध होती हैं। भारतीय प्रबंधकों को उनका स्पष्ट निर्देश होता है, कि वे दो बिंदुओं का खासा ध्यान रखें 1- लागत में कमी 2- गुणवत्ता में निखार एवं सतत प्रयास । मारुति उद्योग के चेयरमैन श्री आर सी भार्गव के मुताबिक जापानी, सूखे तौलिए से भी पानी निचोड़ने में माहिर होते हैं । इसकी तुलना मे भारतीय कंपनियाँ कहीं नहीं टिकतीं । जापानी मानदंड बहुत ही सटीक एवं कठोर होते हैं। कीमतों पर अंकुश रखना, कार्य करने की पद्धति को निरंतर परिष्कृत करना, कड़ी मेहनत, कार्यकुशलता, अनुशासन एवं सर्व सहमति से फैसला लेना अत्यंत महत्वपूर्ण घटक हैं।

इन सभी से यह लगता है, कि या तो भारतीय कामगार वर्ग जापानी चिंतन शैली को अपना नहीं पाए और उसे ठीक तरह समझ नहीं पाए हैं । उदाहरण के तौर पर जापानी मानसिकता यह कभी भी बर्दाश्त नहीं कर सकती कि, इनकी कार्यक्षमता एवं कार्यकुशलता प्रति वर्ष पिछले वर्ष की तुलना में बढ़ती न हो । उनकी कार्यशैली एवं प्रबंधन में ठहराव एकदम मान्य नहीं है। कुछ न कुछ प्रगति प्रति वर्ष होनी ही चाहिए । यह है जापानी कार्यशैली का मूलमंत्र । तो क्या ऐसा नहीं प्रतीत होता है कि जापान अपने देश में प्रचलित तनाव एवं सख्त अनुशासन को भारत एवं अन्य देशों को निर्यात कर रहा है ।

एक अमरीकी, डारियस मेहरी, जो कि जापान की एक कंपनी में कार्य करते थे, अपनी पुस्तक ''नोट्स फ्रॉम टोयोटा - लैंड : एन अमेरिकन इंजीनियर इन जापान'' ने जापानी कार्य पद्धति पर विस्मय जाहिर करते हुए लिखा है कि उनकी जबरदस्त कार्य-निष्ठा, कठोर समय सीमा, निर्धारित समय से ज्यादा किए गए कार्य का भुगतान न किया जाना, नियम का अत्यंत सख्ती से प्रयोग आदि का प्रचलन एक अत्यंत ही भयावह दृश्य उत्पन्न करता है । ""कारोशी'' (KAROSHI) मतलब अत्यधिक काम करने से मृत्यु एवं ''कारोजिसात्सु'' (KAROJISATSU) मतलब अत्यधिक काम के बोझ एवं तनाव के कारण आत्महत्या, ये दोनो ही जापानी कार्यशैली का एक प्रतीक बन चुकी हैं । लगभग 10,000 मौतें "कारोशी'' की वजह से और लगभग 31,000 मौतें ''कारोजिसात्सु'' की वजह से सालाना घटित होती हैं ।

पुरानी जापानी कार्य पद्धति के अनुसार एक जापानी मजदूर/कर्मचारी को जीवन पर्यंत काम सुनिश्चित किया जाता था और इसके एवज में उसे अपने मालिक/प्रबंधन का वफादार सिद्ध करने के लिए अपनी सारी जिंदगी इस कंपनी को सौंपनी पड़ती थी । उसके शिकायत करने पर उसे वफादार

नहीं माना जाता था और काम के सिवा उसकी निजी जिंदगी कुछ भी नहीं होती थी । इसी मानसिकता की उपज थी "कारोशी" एवं "कारोजिसात्सु" । इस मानसिकता के खिलाफ अभी के वर्षो में जापान में "कार्य एवं जीवन में सामंजस्य" स्थापित करने हेतु प्रयास शुरू किए गए हैं । युवा वर्ग पुरानी सोच में अब कतई विश्वास नहीं रखता है और वो वफादारी एवं कार्य के लिए जीवन न्यौछावर करने वाली सोच को नकारता है । जापान का प्रबंधन भी धीरे धीरे समझने लगा है कि उनके देश की सोच एवं पद्धति को किसी दूसरे माहौल में प्रतिस्थापित करना एक मुश्किल कार्य है । प्रबंधन को उस देश, राज्य या क्षेत्र की संस्कृति एवं परिवेश का ज्ञान प्राप्त करना होगा और यह समझना होगा कि नियम एवं कानून किस हद तक कार्यान्वित किए जा सकते हैं । बिना सामाजिक परिवेश को समझे कुछ भी दूसरों पर थोपना घातक हो सकता है । जापानी परिवेश में एक बार यदि कोई योजना काफी सोच समझ कर एवं विचार-विमर्श के बाद बन चुकी है तब उस कार्य का निष्पादन अति सुगमता से हो सकता है । और इस योजना में फेर बदल जापानियों को मंजूर नहीं होता । ऐसा करने से गुणवत्ता में फर्क पड़ता है अत: जापानी अपने कार्य निष्पादन में अत्यंत कठोर होते हैं । यही कारण है कि भारत में कंपनियों में जहाँ मूलत: भारतीय कामगार कार्य करते हैं, इतनी कठोरता उन्हें रास नहीं आती और जिसकी वजह से, प्रबंधन एवं कामगारों के बीच तनाव बढ़ता है, और वह कभी न कभी भयंकर रूप ले लेता है, जैसा कि मारुति सुज़ुकी के मानेसर प्लांट की हिंसा में एक एचआर मैनेजर की मौत में परिणत हुआ । भारतीय प्रबंधन एवं जापानी प्रबंधन में मूलभूत फर्क ही इन कंपनियों में तनाव एवं हंगामे का कारण है । यह बात अब भारतीय एवं जापानी प्रबंधक अच्छी तरह समझ गए हैं और आम राय यह बनी है कि जापानी तकनीक एवं कठोर अनुशासन को भारतीय परिवेश में ढाला जाएगा ताकि उत्पादकता को बढ़ाया जा सके और कामगार एवं प्रबंधन का लक्ष्य कंपनी की प्रगति एवं देश के उत्थान में सहायक हो सके ।

(प्रभात रंजन)
मुख्य परिचालन प्रबंधक

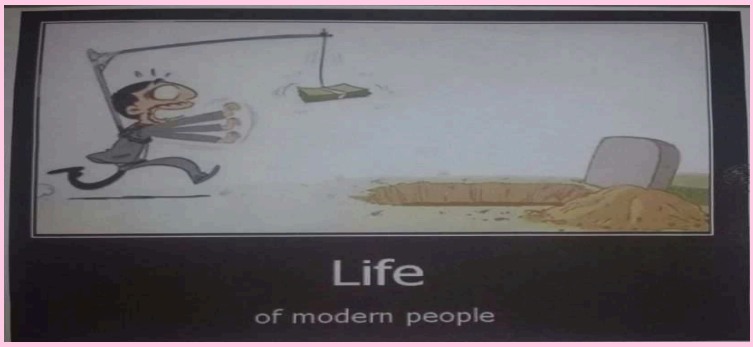

कार्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी व संपोषणीयता (सीएसआर व एस)

जैसा कि आप सभी को विदित है कि मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन अपनी सीएसआर व एस गतिविधियो के अंतर्गत मानखुर्द व गोवंडी में दो स्वास्थ्य इकाइयों 'डॉक्टर्स फॉर यू' के सहयोग से चला रही है । जिस पर लगभग प्रतिदिन 200 मरीज लाभ उठाते हैं । इन स्वास्थ्य इकाइयों पर विभिन्न प्रकार के जागरूकता (अवेयरनेस) शिविर भी आयोजित किए जाते हैं ।

दिनांक 20 जून 2014 को दोनो स्वास्थ्य इकाइयों पर "टी बी कम्युनिटी अवेयरनेस ड्राइव" का आयोजन किया गया जिसमें 'डॉक्टर्स फॉर यू' के सहयोग से 'जॉनसन व जॉनसन' ने भी भाग लिया। स्वेच्छाकर्मियों (वालेंटियर्स) की मदद से 'डॉक्टर्स फॉर यू' ने 8 टीम बनाईं और प्रत्येक टीम ने पांच – पांच इमारतों पर जाकर लोगों को टीबी से बचाव के प्रति जागरूक किया ।

दिनांक 20 जून 2014 को ही दोनों स्वास्थ्य इकाइयों पर मल्टी ड्रग रेसिसटेंट टी बी के मरीजों को न्यूट्रीशियन सपोर्ट देना शुरू किया गया जिससे 30 मरीज लाभान्वित हो रहे हैं ।

दिनांक 23 जुलाई 2014 को लल्लूभाई कंपाउंड, मानखुर्द में ' डॉक्टर्स फॉर यू' द्वारा "मानसून स्वास्थ्य चेक अप " शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें भाग लेने वाले 48 लोगों को बताया गया कि किस प्रकार मानसून के दौरान होने वाली बीमारियों से बचा जा सकता है तथा मानसून से होने वाली बीमारियों का तुरंत उपचार किस प्रकार किया जा सकता है । सभी को संबोधित करते हुए डॉक्टर्स ने बताया कि बारिश के पानी को जमा न होने दें, ताकि मच्छर न पनपें और मच्छरों से होने वाली डेंगू, मलेरिया जैसी खतरनाक बीमारियों से बचा जा सके ।

आयरन फोलिक एसिड दवाइयों का वितरणः- एनीमिया को नियंत्रित करने के लिए लल्लूभाई कंपाउंड में नवयुवतियों व महिलाओं के लिए जुलाई माह में शिविर का आयोजन किया गया ।

जिसमें एनीमिया होने के कारण व इसके बचाव एवं उपायों पर 'डॉक्टर्स फॉर यू' द्वारा विस्तृत चर्चा की गई । उपस्थित 15 नवयुवतियों व 28 महिलाओं को आयरन – फोलिक एसिड की गोलियाँ वितरित की गईं ।

दिनांक 4 अगस्त 2014 को एमआरवीसी की लल्लूभाई कंपाउंड स्थित स्वास्थ्य इकाई पर आँखों का ओपीडी शुरू किया गया है । यह ओपीडी अपने आप में अनूठा है क्योंकि यह आधुनिक मशीनों से सुसज्जित है, आस-पास की जगह में एक भी ऐसा सरकारी या गैर-सरकारी आँखों का दवाखाना नहीं है । इसलिए यह और भी महत्वपूर्ण हो गया है । इस आँखों के ओपीडी का उदघाटन माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा किया गया । समारोह में मिसेज सीएमडी, डीपी, डीएफ, व सीपीओ मैडम ने हिस्सा लिया ।

कौशल क्षमता (स्किल डेवलपमेंट) – एमआरवीसी ने अपनी सीएसआर व एस गतिविधियों के अंतर्गत लल्लूभाई कंपाउंड स्थित स्वास्थ्य इकाई पर" पुनर्वास व पुनर्स्थापन" क्षेत्रों, अंबेडकर नगर, नटवर पारिख कंपाउंड, गोवंडी व लल्लूभाई कंपाउंड मानखुर्द की महिलाओं व नवयुवतियों के लिए "महाराष्ट्र उद्योग विकास संस्थान" (मिडी) के सहयोग से "सिलाई कटिग व कढ़ाई" का प्रशिक्षण शुरू किया है । जिसमें दिनांक 23 जून 2014 से 30 प्रशिक्षुओं का पहला बैच प्रारंभ किया गया एवम् दिनांक 02 जुलाई 2014 से दूसरा बैच 30 प्रशिक्षुओं के साथ शुरू किये गये जो कि सितम्बर, 2014 में पूर्ण हो चुके हैं ।

इस प्रशिक्षण को मिली लोकप्रियता को देख कर इन बैचों की समाप्ति के उपरांत दो और बैच (20 प्रशिक्षुओं प्रति बैच) शुरू किये गये ।

"पुनर्वास व पुनर्स्थापन क्षेत्र," अंबेडकर नगर, लल्लूभाई कंपाउंड व नटवर पारिख कंपाउंड के पुरुषों व नवयुवकों को कौशल क्षमता (स्किल डेवलपमेंट) के अंतर्गत "मोटर कार ड्राइविंग" सिखाने की योजना बनाई गई है, जिसका कार्य भी प्रगति पर है ।

एमआरवीसी का सीएसआर व एस के तहत पुनर्वास व पुनर्स्थापन क्षेत्र के लोगों को विकास पथ पर ले जाने का प्रण निरंतर जारी है ।

(अनुपम शर्मा)
कर्मचारी व कल्याण निरीक्षक

कंप्यूटर में हिंदी

विचारों के आदान प्रदान के लिए भाषा का जन्म हुआ तथा भाषा को स्थायी स्वरूप देने के लिए उसे लिपिबद्ध करने की आवश्यकता हुई । जैसे जैसे मानव सभ्यता विकसित होती गई विचारों को संग्रहित करने की जरूरत बढ़ती गई और लेखनी का अविष्कार हुआ । प्रस्तर युग अथवा पाषाण काल में जब मानव इतना विकसित नहीं था वह अपनी मनोभावनाओं को प्रकट करने के लिए मूर्तियों का सहारा लेता था । अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने के लिए शिलालेख लगाए जाते थे ।

कागज का अविष्कार होने से पूर्व पेड़ों की छाल और भोजपत्र पर लिख कर दस्तावेजों को सुरक्षित रखा जाता था । कालांतर में टाइपराइटर निर्मित किया गया और समाचार–पत्र, पत्रिकाएं और पुस्तकें मुद्रित करने के लिए प्रेस ने कार्य करना प्रारंभ किया। प्रेस का मैटर तैयार करने के लिए धातु के अलग अलग अक्षरों को जोड़ कर कंपोज किया जाता था । यह एक कठिन कार्य था क्योंकि अक्षरों को उल्टी ओर से पहचान कर प्रूफ रीडिंग की जाती थी । टाइपराइटर पर कार्य करना इसकी अपेक्षा आसान था परंतु इसमें भी सावधानी बरतनी पड़ती थी, क्योंकि कोई गलती होने पर या कोई लाइन छूट जाने पर सारी मेहनत बेकार जाती थी । छोटी मोटी गलती को हाशिए में लिख कर या इंक लगा कर ठीक किया जाता था, परंतु बड़ी गलती होने पर मैटर को दोबारा टाइप करना पड़ता था । कागज भी खराब होता था ।

वर्तमान समय में कंप्यूटर और लैपटाप पर टाइप करना बहुत आसान है क्योंकि इसमें त्रुटियों को संशोधित किया जा सकता है, और विषयवस्तु को मनचाहा आकार दिया जा सकता है । अब तो भाषा को लिपिबद्ध करने की बहुत सी पद्धतियां हैं । मुद्रण को सुंदर व आकर्षक बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के अक्षरों के बहुत सारे फोंट्स व सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं । मोबाइल और ई–मेल के माध्यम से हम अपने संदेश भेज सकते हैं।

अब हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को कंप्यूटर पर टाइप करना बहुत सरल है। लिपि में एकरूपता रहे और फोंट संबंधी समस्या न हो अतः हमें यूनीकोड एनकोडिंग अपनाना चाहिए ।

(प्रदीप कुमार)
राजभाषा अधिकारी

यह भी गुजर जाएगा

एक बार एक राजा ने अपने सभी दरबारियों और पंडितों को बुलाया और उनसे पूछा, '' क्या कोई ऐसा मंत्र या सुझाव है जो प्रत्येक स्थिति, हर परिस्थिति, हर स्थान और हर समय में कार्य करे । प्रत्येक खुशी, प्रत्येक दुःख, प्रत्येक पराजय, प्रत्येक विजय में कारगर हो सके । सभी प्रश्नों का एक ही हल हो । कुछ ऐसा – कि जब आप में से कोई हाजिर न हो तो मेरी सहायता कर सके तो वह मेरे काम आए । बताइए क्या कोई ऐसा मंत्र है ?

सभी विद्वान राजा के इस प्रश्न से चकरा गए । उन्होंने बार बार सोचा । लंबी चर्चा के बाद एक बूढ़े आदमी ने एक ऐसा सुझाव दिया जिसे सभी लोगों ने मान लिया । वे राजा के पास गए और उन्हें कागज में लिखा हुआ कुछ दिया और यह शर्त रखी कि राजा इसे जिज्ञासावश देखेगा नहीं । केवल घोर संकट में ही जब राजा अपने को अकेला पाए और कोई अन्य उपाय न हो वह इसे देख सकता है । राजा ने कागज को अपनी हीरे की अंगूठी के नीचे रख लिया ।

कुछ समय पश्चात, पड़ोसी राज्यों ने उसके राज्य में आक्रमण कर दिया, राजा और उसकी सेना बहादुरी से लड़ी किंतु जीत न सकी । राजा को अपने घोड़े पर बैठ कर भागना पड़ा । शत्रु उसका पीछा कर रहे थे और लगातार उसके नज़दीक आते जा रहे थे । अचानक राजा ने अपने आपको सड़क के छोर पर ऐसी जगह खड़ा पाया जहां से कहीं भी जाने का रास्ता न था । उसके आगे हजारों फुट गहरी पथरीली घाटी थी । यदि उसमें छलांग लगाई तो उसका वहीं अंत हो जाएगा । वह वापस भी नहीं लौट सकता क्योंकि यह एक छोटी सड़क थी । दुश्मन के घोड़ों के टापों की आवाज तेजी से उसके करीब आती जा रही थी । राजा असहाय हो गया । उसे कोई उपाय न सूझा । अचानक उसने देखा कि धूप में उसकी अंगूठी का हीरा चमक रहा था । उसे अंगूठी में छिपा संदेश याद आया । उसने हीरे को खोला और संदेश को पढ़ा । संदेश था ''यह भी गुजर जाएगा'' ।

राजा ने इसे पढ़ा, दोबारा पढ़ा । उसके मस्तिष्क में आया हां, यह भी गुजर जाएगा । थोड़े ही दिन पहले मैं अपने राज्य का सुख भोग रहा था । मैं सभी राजाओं में सबसे शक्तिशाली था । आज, जब राज्य और उसका आनंद चला गया है, मैं यहॉ अपने शत्रुओं से बचने की कोशिश कर रहा हूं । उन ऐश्वर्यपूर्ण दिनों की तरह यह संकट का दिन भी गुजर जाएगा । उसके चेहरे पर एक शांति छा गई । वह वहीं पर खड़ा रहा । जहॉ पर वह खड़ा था । वह स्थान प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण था । उसे नहीं पता था कि ऐसा सुंदर स्थान भी उसके ही राज्य का एक हिस्सा था ।

संदेश ने उसे अत्यंत प्रभावित किया । उसने राहत महसूस की और भूल गया कि कोई उसका पीछा कर रहा था । कुछ मिनटों के बाद उसे ज्ञात हुआ कि घोड़ों की आवाज और उसकी ओर आते हुए शत्रु उससे दूर जा रहे हैं । वे नज़दीक के दूसरे पहाड़ों की ओर मुड़ गए थे । राजा बहुत बहादुर था । उसने अपनी सेना पुनः संगठित की और दोबारा युद्ध किया । उसने शत्रु को हरा कर अपना साम्राज्य पुनः हासिल कर लिया । विजय के बाद जब वह अपने राज्य में वापस लौटा तो उसका बहुत सम्मान और स्वागत किया गया । पूरी राजधानी विजयोत्सव मना रही थी । प्रत्येक व्यक्ति त्यौहार मनाने में मस्त था । हर एक घर, हर कोने से राजा पर फूलों की वर्षा हो रही थी । लोग नाच गा रहे थे । एक क्षण के लिए राजा ने अपने आप से कहा, ''मैं एक बहादुर और महान राजा हूं । मुझे हराना आसान नहीं है । स्वागत सत्कार के बीच उसने देखा कि उसके अंदर एक अहम भावना आ गई है ।

अचानक उसकी अंगूठी का हीरा धूप में चमका और उसे संदेश की याद आई । उसने उसे खोला और दोबारा पढ़ा, ''यह भी गुजर जाएगा''

वह शांत हो गया । उसका चेहरा पूरी तरह बदल गया । अहंकार से बदल कर वह कोमल भावनाओं से ओतप्रोत हो गया । अगर यह भी जाने वाला है तो यह तुम्हारा नहीं है । हार तुम्हारी नहीं थी, विजय तुम्हारी नहीं हुई, तुम केवल एक दर्शक हो प्रत्येक वस्तु गुजर जाएगी । हम सब इसके गवाह हैं । हमने अनुभव किया है कि जिंदगी आनी –जानी है । खुशी आती और जाती है । दुःख आता और जाता है ।

जैसा कि आपने यह कहानी पढ़ी, आप शांतिपूर्वक बैठ कर अपने जीवन का मूल्यांकन करें। यह भी गुजर जाएगा । अपने जीवन में खुशी और विजय के क्षणों पर विचार करें । क्या वे स्थायी हैं ? वे सब आते और चले जाते हैं ।

इसी प्रकार जिंदगी बीत जाती है । इस संसार में स्थायी कुछ भी नहीं है । परिवर्तन के नियम के अलावा सब कुछ परिवर्तनशील है । अपने स्वयं के अनुभव से इस पर विचार करें । आपने सभी परिवर्तन देखे हैं । वर्तमान में जो समस्याएं हैं वे भी सदा नहीं रहेंगी क्योंकि सदा कुछ भी नहीं रहता । सुख –दुःख एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । वे भी सदा नहीं रहेंगे ।

आप सिर्फ परिवर्तन के साक्षी हैं । इस पल का अनुभव करें। इसे समझें और इसका आनंद लें। ''यह भी गुजर जाएगा''

सुश्री संगीता वर्मा
कंपनी सचिव

एम्पलाई ऑफ द मंथ – जून 2014

श्री राजकुमार शर्मा
सहायक इंजीनियर

श्री राजकुमार शर्मा, एकमात्र ऐसे सहायक इंजीनियर हैं जिन्हें एलओटीएस IV व V के तहत 5 स्टेशनों के लिए ट्रेसपास कंट्रोल कार्य हेतु नियुक्त किया गया । इनके द्वारा चार स्टेशनों वसई रोड, नालासोपारा, बोरीवली एवं कांदीवली पर बहुत ही निपुणता से अपने कार्य को अंजाम दिया गया। इन्होंने अपनी पूरी क्षमता, कठिन प्रयास, ईमानदारी व निष्ठा के साथ बोरीवली, बसई रोड एवं नालासोपारा के पादचारी पुलों की स्थापना का कार्य पूर्ण करवाया । श्री शर्मा ने न केवल दिन–रात मेहनत करके अपितु छुट्टियों के दौरान भी कार्य किया एवं ओपन लाइन के साथ सहयोग करके यातायात को बाधित नहीं होने दिया । श्री शर्मा ने अकेले ही सभी औपचारिकताओं जैसे दस्तावेज इत्यादि सभी कार्य समाप्त होने से पूर्व ही तैयार करवा लिए । मानसून पूर्व ही श्री शर्मा ने यथासंभव सभी कार्यो को सफलतापूर्वक पूर्ण कर पश्चिम रेलवे के ट्रेसपास कार्य को एक नई दिशा दी ।

ट्रेसपास कंट्रोल में श्री राज कुमार शर्मा, सहायक इंजीनियर के जोश और उत्साहपूर्वक कार्य करने के लिए इन्हें जून–2014 के लिए ''एम्पलाई आफ द मंथ'' का पुरस्कार दिया गया ।

श्री नारायणदास पिल्लई,
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर

श्री नारायणदास पिल्लई, वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर द्वारा टाटा विद्युत रिसीविंग स्टेशन परेल से चिंचपोकली स्टेशन, (मध्य रेल) तक के 110 किलोवाट क्षमता की केबल बिछाने के कार्य का सफलतापूर्वक अंजाम दिया । जिसमें दिनांक 29.06.2014 को सफलतापूर्वक 110 किलोवाट का करंट प्रवाहित किया गया । साइट सुपरवाइजर के रूप में मुख्य भूमिका निभाते हुए श्री पिल्लई द्वारा ट्रेक्शन उप स्टेशन से संबंधित सभी गतिविधियों को अपने समक्ष पूर्ण करवाया । सभी मुख्य गतिविधियां जून, 2014 तक इनके द्वारा पूर्ण कर ली गईं ।

श्री नारायणदास पिल्लई द्वारा किए गए सराहनीय कार्य के लिए इन्हें माह जून, 2014 के लिए ''एम्पलाई आफ द मंथ'' का पुरस्कार दिया गया ।

एम्पलाई ऑफ द मंथ – जुलाई 2014

श्री ए मोहन अर्मुगम,
सहायक इंजीनियर

श्री ए मोहन अर्मुगम, सहायक इंजीनियर पी को एमयूटीपी ।। के अंतर्गत मध्य रेलवे के ठाणे–दिवा खंड में पांचवीं व छठी लाइन का निर्माण कार्य करने हेतु नियुक्त किया गया था । जो कि इस खंड पर 3 बड़े पुल, पादचारी पुल, आरयूबी एवं मुंब्रा आरओबी का कार्य देख रहे थे । ठाणे एवं मुंब्रा खाड़ी पर बनाये जाने वाले मुख्य पुल बहुत ही महत्वपूर्ण हैं । जिनमें मुंब्रा खाड़ी पर पुल बनाना बहुत ही कठिन एवं आवश्यक था क्योंकि इस पुल की लंबाई 76.2 मी एवं वजन 325 मैट्रिक टन था । मनमाड कारखाने के ग्रीडर फ्रेबीकेटर की सहायता से ग्रीडर को साइट तक लाया गया एवं जून–जुलाई में खाड़ी पर लांच किया गया ।दूसरे चरण में 20 व 21 जुलाई, 2014 को दूसरा ग्रीडर लांच करना एक बहुत बड़ा चैलेंज था क्योंकि मानसून के दौरान भारी वर्षा साथ ही हाई टाइड की वजह से मुंब्रा खाड़ी में पानी का बहाव खतरे के निशान के उपर पहुंच जाता है । फिर भी श्री अर्मुगम के चौबीसों घंटे निगरानी व अथक प्रयास से ग्रीडर लांच का कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हुआ ।

श्री ए मोहन अर्मुगम को उनके सफल प्रयास एवं सराहनीय कार्य के लिए माह जुलाई 2014 के ''एम्पलाई ऑफ द मंथ'' पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

श्री एम.के.गौतम,
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर

श्री एम.के.गौतम, वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर ने जोगेश्वरी स्टेशन के वर्किंग केबल को स्थानांतरित करने का कार्य बिना किसी रुकावट के सफलतापूर्वक संपन्न किया । हार्बर लाइन के अंधेरी–गोरेगांव विस्तारीकरण के लिए वर्तमान केबल को नये सबवे के अंदर से लिया गया । परंतु सबवे को केबल से कहीं भी अवरुद्ध नहीं किया गया है । श्री गौतम ने पूरी योजना के साथ 18 रातों को ब्लॉक करके 43 चालू केबल को स्थानांतरित करने का अत्यंत कठिन कार्य सरलतापूर्वक पूरा किया । इस कार्य के दौरान श्री गौतम ने नये केबल बिछवाए, नए स्थानों पर नए टेल केबल के साथ नए बॉक्स को लगवाना, 94 केबल की टेस्टिंग करना उन्हें स्थापित करना और ओपन लाइन को सुपुर्द करना जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए ।

श्री एम.के.गौतम, वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर को उनके द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्य हेतु माह जुलाई 2014 के लिए ''एम्पलाई ऑफ द मंथ'' पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

बच्चों की यादें

दो फूल खिले मेरे आंगन में
मैं रही देखती इधर उधर
क्यारी को पानी दिया अभी
सूखे पत्ते चुन आई कभी
फूलों के रूप – रंग को पर
चित्रित न किया अंतरमन में ।

दो तारे चमके चांदी – से
मेरे मन रूपी अंबर में
मैं सूरज के घोड़ों पर चढ़
गई अपनी दिनचर्या में जकड़
उन तारों का चमकीलापन
पहचान न पाया मेरा मन
हो गए लुप्त वे आंधी – से ।

दो पंछी गाना गाने को
मेरी बगिया में आए थे
कितना मीठा वह गाना था
पर मेरा मन दीवाना था
जब तक बगिया के पास आई
पंछी तैयार थे जाने को ।

अब बगिया है, हैं झाड़ बहुत
नभ में तारों की बाढ़ बहुत
चिड़ियों का है कोलाहल भी
पर वैसा सुर न सुना कभी
वो फूल फिर कभी नहीं खिले
वैसे तारे फिर न निकले ।

(स्मृति वर्मा)
वित सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी

मन क्यों जलता है

मुस्कराने का मौका अब तलाशना पड़ता है ।
सच पूछो तो यह बहुत खलता है ।

मानव के हाथों मानवता को बिकते देखा है,
न जाने ईश्वर का यह कैसा लेखा है ।

अच्छा होता मेरी सोच कम होती ।
कम से कम मेरी आंखें तो न नम होतीं ।

विवश होकर बहुत कुछ सहना पड़ता है ।
सच पूछो तो यह बहुत खलता है ।

कुछ पाने की चाहत, कुछ खो जाने का डर ।
ठहरी सी जिंदगी बोझिल सी नज़र ।

दिल की बात किसी से कहने में डर लगता है।
सच पूछो तो यह बहुत खलता है ।

संगीत के छंद अब बदल से गए हैं ।
परिभाषाएं जीवन की शायद अब नए हैं ।

हर शाम बाजारों में क्या कुछ नहीं बिकता है ।
सच पूछो तो यह बहुत खलता है ।

लौट चलें, चलो अपने घर किस बात से है तुमको डर ।
आशाओं के दीप जलाने में, अपनों का संसार सजाने में
किसी का क्या बिगड़ता है ।

फले फूले हर मन, सुगंधित हो हर उपवन
यह सोच कर किसी का मन क्यों जलता है ।
सच पूछो तो यह बहुत खलता है ।

राजेश कुमार पाठक
वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी, लेखा

सायों की साजिश

मेरे साये मुझसे मेरे होने की गवाही माँगे,

हम सफर रेंगते हैं, ज़मी पर मेरा अक्स लयि।
अब क्या ज़ख्मों की दुहाई माँगे,
मेरे साये मुझसे मेरे होने की गवाही माँगे ॥

मुझसे जन्में, दौड़ते रहे जवानी की धूप मे,
शामे-ए-जिन्दगी में मुझसे लम्बे हो चले हैं मेरे साये।
अंधेरे ढूढते है रश्तों की जमा पूंजी,
नज़र अब नहीं आते मेरे साये ॥

वह देखो इन्सानियत का जनाज़ा
मौका परस्तों के कांधे पे सवार,
धडयाली आंसू बहा रहा है
कब्र पर मेरी बरबादी का जश्न मना रहा है ॥
सजदा करो, ये इन्सानियत का मरघट है
काँपते अक्स चिताओं पर यहाँ ,
अरमान जलाए जाते हैं
रश्ते भुनाए जाते हैं
बरबादी –ए- जश्न मनाए जाते है
राही, गम न कर "कारवां" के बछिड़ जाने का
बहारें फिर आएगीं ,वक्त आएगा मुस्कराने का
कह दो अतीत के सायों को'
सूरज को डूबने का भय नहीं होता
सूर्य का क्षय नहीं, उदय होता है ॥

गरिश कुमार यादव
कार्यालय अधीक्षक

रेल का सफर

शाम का समय है रेल छूटने को है
सारे मुसाफिरि लुत्फे सफ़र लूटने को है
मै भी हूं बैठा अपनी जगह आराम से
गांव जाने को ली है छुट्टी अपने काम से
गाडी में सफर करने के अजीब हैं सपने
गैर भी बन जाते हैं कुछ पल के लयि अपने
माना हवाई जहाज का आज फास्ट दौर है
रेल के सफर का लेकनि मज़ा ही कुछ और है
नकिली वो अपनी शान से हरेक मंजलि की तरफ
बढ़ती है मौजे जैसे अपने साहलि की तरफ
नकिला शहर और छोटे देहात आते रहे
मुझको भी कुछ गुज़रे लम्हें याद आते रहे
मौसम हसीं और रातें भी हसीन हैं
हाथों मे मेरे कलम और एक मेगज़ीन है

इस तरह कतिाब में मै ऐसे खो गया
जाने कब आंख लगी और मैं सो गया
मद्धम सी चांद तारों की आब-व- ताब है
पहली करिण आफ़ताब की लाजवाब है
पलकें खुली तो देखा रोशन हुआ जहां
बेचैन मन यह पूंछे पहुंचा हूं मैं कहां
खेत और ज़मीन नज़रों के आगे थी घूमती
ठंडी हवाएं गालों को आकर के चूमती
दूर से ही नज़र मुझको मेरा वतन आ गया
बचपन का मेरे गुलस्ताने चमन आ गया
उतर कर मुसाफरि दोस्तों से कहा अलवदा
थोड़ी ही देर में फरि गाड़ी ने दी सदा
कसी को हंसाती , कसी को रुलाती रेल
बछिड़ती कसी से कसी को मलिाती रेल

कलीमउल्लाह आदमजी
लपिकि/सं एवं दू

प्रार्थना ऐसे करनी चाहिए जैसा कि सब कुछ ईश्वर पर ही निर्भर है और काम ऐसे करना चाहिए जैसे कि सब कुछ हम पर ही निर्भर है !

कल रात हिंदी मेरे सपने में आई

कल रात हिंदी मेरे सपने में आई थी
उसके मुख मंडल पर गहरी उदासी छाई थी

मैंने पूछा इतनी गुमसुम हो कैसे
अब तो हिंदी दिवस है आना
सम्मान तुम्हे सबसे है पाना

हिंदी बोली यही गिला है
वर्ष का एक दिन मुझे मिला है
अपने देश में हूँ पराई
ऐसा मान न चाहूं भाई

मेरे बच्चे मुझे न जाने
लोहा अंग्रेजी को माने
सीखें लोग यहाँ जापानी
पर मैं हूँ बिलकुल अनजानी

हिंदी की यह बातें सुनी जब
ग्लानी से भर उठा मैं तब
सोचा माँ की पीर बटा दूं
जन-जन तक हिंदी पहुंचा दूं

सुविचार

दूसरों को सहयोग देना ही उन्हें अपना सहयोगी बनाना है।

– अज्ञात

मुंबई रेलवे विकास कॉर्पोरेशन लि.

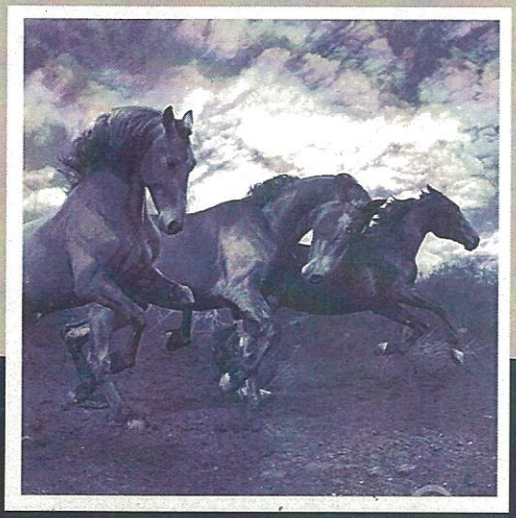

स्फूर्ती से आगे बढते हुए

दूसरी मंज़िल, चर्चगेट स्टेशन भवन,
चर्चगेट, मुंबई 400020.